

# डॉ. रोजर ग्रीन, अमेरिकी ईसाई धर्म, सत्र 20, अमेरिका में सामाजिक सुसमाचार, भाग 2

© 2024 रोजर ग्रीन और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. रोजर ग्रीन द्वारा अमेरिकी ईसाई धर्म पर दिए गए उनके व्याख्यान हैं। यह सत्र 20 है, अमेरिका में सामाजिक सुसमाचार, भाग 2।

ठीक है, मैं पाठ्यक्रम के पृष्ठ 15 पर हूँ, इसलिए हम यहीं हैं, और हम लगभग वहीं हैं जहाँ हमें होना चाहिए।

हम बात कर रहे हैं। सबसे पहले, हमने वाल्टर रौशनबुश का अवलोकन किया, और आप रौशनबुश की इवांस जीवनी पढ़ रहे हैं, इसलिए आपने इसे अब तक शायद दो बार पढ़ा होगा, इसलिए आप उस जीवनी से, अध्याय दर अध्याय परिचित होंगे। तो, वाल्टर रौशनबुश, लेकिन अमेरिका में ईसाई धर्म में एक बहुत, बहुत, बहुत महत्वपूर्ण व्यक्ति, कुछ चीजों को नया रूप देने की तरह, इसमें कोई संदेह नहीं है। इसलिए, हमने उनके और उनके जीवन और अन्य पर बहुत कुछ किया, और हम अभी भी ए पर हैं, हम अभी भी वाल्टर रौशनबुश पर हैं और उनके बारे में बात कर रहे हैं, और फिर हम सामाजिक सुसमाचार के धर्मशास्त्र के बारे में बात करेंगे, और फिर अमेरिकी ईसाई धर्म में सामाजिक सुसमाचार के योगदान के बारे में बात करेंगे।

तो, यह हमारी रूपरेखा है। तो, हम रौशनबुश के साथ जहाँ हैं, हम वास्तव में उनके कार्यों पर हैं, और हम वास्तव में, मुझे लगता है कि हम, हाँ, यहाँ उनकी रचनाएँ हैं, ईसाई धर्म और सामाजिक संकट, जो उन्होंने 1907 में लिखी थीं। अब, आप शायद इस सप्ताह ईसाई धर्म और सामाजिक संकट नहीं पढ़ने जा रहे हैं।

हमें उम्मीद है कि आप इस गर्मी में इसे पढ़ेंगे। तो, मैंने जो किया है वह आपको ईसाई धर्म और सामाजिक संकट के बारे में पाँच बुनियादी बिंदु देना है, और अंतिम बिंदु यह है कि हम यहाँ से कहाँ जाएँगे? क्या हम यहीं नहीं रुके हैं? मुझे लगता है कि हम यहीं रुके हैं। मुझे नहीं लगता कि हम आगे बढ़ें हैं।

तो, चलिए अब किताब के बारे में कुछ और बातें कहते हैं और इस बारे में कि रौशनबुश किताब में क्या करने की कोशिश कर रहे थे, और फिर हम अगली किताब, द थियोलॉजी ऑफ द सोशल गॉस्पेल की ओर बढ़ेंगे। लेकिन, अगर हमने ईसाई धर्म और सामाजिक संकट, 1907 का उल्लेख नहीं किया, तो वह वास्तव में ईश्वर के राज्य की अवधारणा में विश्वास करते हैं। रौशनबुश के लिए यह उनकी किताबों, उनके लेखन और उनकी शिक्षाओं में एक केंद्रीय अवधारणा है।

और वह जो करने की कोशिश कर रहा है, वह है ईश्वर की भाषा को आधुनिक दुनिया में, 20वीं सदी में लाना। वह 20वीं सदी के चर्च को यह समझने में मदद करने की कोशिश कर रहा है कि

ईश्वर का राज्य अब 20वीं सदी से कैसे संबंधित है, जिसे, बेशक, वह यीशु के केंद्रीय संदेश के रूप में देखता है, जो कि वह था। ईश्वर का राज्य निकट है।

पश्चाताप करो और सुसमाचार पर विश्वास करो। और इसलिए, रौशनबुश, पुस्तक में, उस महान संदेश को पुनः प्राप्त करने का प्रयास कर रहे हैं। अब, उन्होंने पुस्तक में यह भी माना कि 1907 की तारीख महत्वपूर्ण है; उनका यह भी मानना है कि चर्च, मसीह का शरीर, अब, चर्च परमेश्वर के राज्य को लाने में सहायक हो सकता है।

चर्च ईश्वर के राज्य को लाने में मदद कर सकता है, और आंशिक रूप से, यह इस दुनिया में बुराई को कम करने, बुराई से लड़ने, बुराई को कम करने, और इसी तरह, ईश्वर के राज्य में प्रवेश करने में मदद कर सकता है। इसलिए, चर्च के काम के बारे में उनका दृष्टिकोण बहुत ऊंचा है। फिर से, चर्च को कैपिटल सी के साथ। हमने दूसरे दिन उल्लेख किया कि जब चर्च के काम की बात आती है, तो वह बैपटिस्ट और मेथोडिस्ट जैसे अधिक लोकतांत्रिक रूप से उन्मुख चर्चों को ऐसा करने की स्थिति में अधिक देखता है।

क्योंकि, जहाँ तक उनका सवाल है, बैपटिस्ट और मेथोडिस्ट आदिम चर्च का सबसे स्पष्ट रूप से प्रतिनिधित्व करते हैं। इसलिए, वह कभी-कभी पदानुक्रमित चर्चों के पीछे पड़ जाते हैं क्योंकि वे चर्च में और साथ ही राष्ट्र में इस तरह के लोकतांत्रिक आवेग के रास्ते में खड़े हैं। तो, ईसाई धर्म और सामाजिक संकट।

लेखन की तिथि बहुत महत्वपूर्ण है। ठीक है, पुस्तक के बारे में एक और बात। रौशनबुश इस पुस्तक में और अन्य पुस्तकों में अपने लेखन में जो करने की कोशिश करेंगे, वह बाइबिल अध्ययन या धर्म और नैतिकता से संबंधित है।

तो, बाइबिल अध्ययन, धर्म, नैतिकता। वह इन सभी को एक साथ लाने की कोशिश कर रहा है। वह अपनी शिक्षा में इस तरह की एकता बनाने की कोशिश कर रहा है।

और इसलिए, वह पुस्तक में ऐसा करने की कोशिश करता है। यदि आप में से कोई मुझे ईसाई धर्मशास्त्र पाठ्यक्रम के लिए बुलाता है, तो आप जानते होंगे कि मेरे एक प्रोफेसर कहते थे कि सभी अच्छे धर्मशास्त्र नैतिकता में समाप्त होते हैं। खैर, यह सच होगा।

रौशनबुश का मानना है कि सभी अच्छे धर्मशास्त्र नैतिकता में समाप्त होते हैं। इसलिए, वह बाइबिल के अभिलेखों और धर्म से निकलने वाले नैतिक आदेशों को देखने की कोशिश करता है।

तो, यह रौशनबुश के लिए वास्तव में बहुत महत्वपूर्ण है। यदि आप रौशनबुश की कोई किताब पढ़ने जा रहे हैं, तो यह किताब आपको पढ़नी चाहिए: ईसाई धर्म और सामाजिक संकट। हम दूसरी किताब, सामाजिक सुसमाचार के लिए धर्मशास्त्र के बारे में भी बात करने जा रहे हैं।

अब, ध्यान दें कि उन्होंने इसे कब लिखा, 1917 में। तो, हम उस समय प्रथम विश्व युद्ध के बीच में थे। तो, सामाजिक सुसमाचार का धर्मशास्त्र।

ठीक है, इस पुस्तक में रौशनबुश को जो करने की ज़रूरत है, वह है बुराई को स्वीकार करना। उसे वास्तविकता और अराजकता को स्वीकार करना होगा जो प्रथम विश्व युद्ध ने संस्कृति और ईसाई धर्म पर पैदा की है। और इसलिए, उसे एहसास होता है कि 1907 में उसने जो बातें कही थीं, वे आज के विश्व युद्ध की तुलना में बहुत आशावादी थीं। और इसलिए, वह इस पुस्तक में ऐसा करने की कोशिश करता है, लेकिन उसे वास्तव में ऐसा करने के लिए मजबूर किया जाता है।

अब, वह जो कहते हैं, अगर आप रौशनबुश की तुलना लिंकन से करें, तो यह एक बहुत ही दिलचस्प तुलना और विरोधाभास होगा। याद रखें, हमने अब्राहम लिंकन के साथ कहा था कि गृह युद्ध यह पता लगाने का आसान तरीका नहीं था कि हमारे बीच गृह युद्ध क्यों हुआ। आप जानते हैं, यहाँ अच्छे लोग हैं, यहाँ बुरे लोग हैं।

खैर, इसे देखने का यह एक आसान तरीका है। हालाँकि, लिंकन ने गृहयुद्ध पर काबू पाने के लिए जो बारीकियाँ प्रस्तावित की थीं, वे एक तरह से कॉर्पोरेट अपराधबोध और पश्चाताप और स्वीकारोक्ति की आवश्यकता थी अगर हम आगे बढ़ने जा रहे थे। खैर, रौशनबुश भी यही बात करते हैं।

उनका मानना था कि पूरी बुराई सिर्फ एक देश में नहीं पाई जाती; सभी देशों में इतनी बुराई है कि वह सब जगह मौजूद है। इस दुनिया में सभी लोगों में इतनी बुराई है कि वह सब जगह मौजूद है।

और इसलिए, वे कहते हैं कि कॉर्पोरेट बुराई के मामले में बुराई का अंतिम कारण दो चीजें हैं। तो, मैं उन दो चीजों का उल्लेख करना चाहता हूँ जो अंततः उस बुराई का कारण बनीं जिससे हम 1917 में गुजर रहे हैं, सामाजिक सुसमाचार का धर्मशास्त्र। नंबर एक वह है जिसे उन्होंने अनर्जित लाभ की लालसा कहा।

अनर्जित लाभ की लालसा। रौशनबुश ने यह भी कहा कि सभी राष्ट्र अनर्जित लाभ की लालसा प्रदर्शित करते हैं। वह लाभ जो उन्होंने अर्जित नहीं किया है, और वे अन्य राष्ट्रों और अन्य लोगों से उस लाभ की लालसा करते हैं।

तो, जहाँ तक रौशनबुश का सवाल है, यह समस्याजनक है, और सभी राष्ट्रों में यह समस्या है। कोई भी इससे मुक्त नहीं है। दूसरी बात जिसके बारे में उन्होंने बात की वह साम्राज्यवादी शक्तियाँ थीं।

साम्राज्यवादी शक्तियाँ। सभी राष्ट्र इस तरह के साम्राज्यवाद और उपनिवेशीकरण की इच्छा को साझा करते हैं। ऐसा सिर्फ एक राष्ट्र नहीं करता, इसलिए यहाँ अच्छे और बुरे लोग हैं।

उनका मानना था कि हम सभी इस तरह की कॉर्पोरेट बुराई में भागीदार हैं। इसलिए, सामाजिक सुसमाचार के धर्मशास्त्र की शुरुआत यह स्वीकार करने से होती है कि हम आज कहाँ हैं। हम अराजकता के बीच में हैं।

हम जानते हैं कि इसने हमारे कुछ उम्मीद भरे संकेतों को नष्ट कर दिया है, जो मेरे पास थे, रौशनबुश कहते हैं, 1907 में। हम यह जानते हैं। आइए इसका सामना करें और इससे निपटने की कोशिश करें।

ठीक है, तो अब किताब के बारे में एक और बात यह है कि, अब किताब के बाकी हिस्सों में, वह भविष्य के लिए आशा रखता है। अराजकता के बावजूद, बुराई के बावजूद, हम खुद को अभी जिस चीज में उलझा हुआ पाते हैं, उसके बावजूद भविष्य के लिए आशा है, इसमें कोई संदेह नहीं है। और वह जो करना चाहता था वह यह था कि वह ईश्वर के राज्य की धारणा को पुनर्स्थापित करना चाहता था।

इसलिए, हम जिस दौर से गुज़र रहे हैं, उसके बावजूद हमें यह उम्मीद है कि हम इस मुश्किल दौर से निकलेंगे और हम परमेश्वर के राज्य की पुनर्स्थापना देखेंगे, भले ही हालात कितने भी बुरे क्यों न लगें। इसलिए, वह अपने राज्य के विषय पर वापस आता है और लोगों को याद दिलाता है, जैसा कि हम ईसाई धर्मशास्त्र पाठ्यक्रम में करने की कोशिश करते हैं, लोगों को याद दिलाता है कि बाइबल अच्छाई और बुराई की कहानी नहीं है, और हम पीछे खड़े होकर सोच रहे हैं कि कौन सा पक्ष जीतने वाला है। क्या परमेश्वर जीतेगा, या बुराई जीतेगी? खैर, हम निश्चित नहीं हैं।

तो, नहीं, यह बाइबिल का रिकॉर्ड नहीं है। यह रौशनबुश की बाइबिल की कहानी नहीं है। बाइबिल ईश्वर द्वारा बुराई पर जीत की कहानी है।

बाइबल ईश्वर की विजय की कहानी है। इसलिए, जहाँ तक रौशनबुश का सवाल है, आशा यह थी कि ईश्वर के राज्य की आशा बाइबल में ही निहित थी। इसलिए, यह बहुत आशापूर्ण है।

जब हम इस प्रक्रिया से गुजरेंगे, तो देखेंगे कि इसे कैसे बहाल किया जाता है। फिर, वह अपनी पुस्तक में यह भी सोचना चाहते हैं कि ईसाई इस बहाली प्रक्रिया में विशेष रूप से कैसे सहायक हो सकते हैं। और वह अंतर्राष्ट्रीय संबंधों को ईसाईकृत करने के बारे में बात करते हैं।

इसलिए, एक जगह जहाँ वह चाहते थे कि ईसाई प्रवेश करें वह था राजनीतिक क्षेत्र और अंतर्राष्ट्रीय राजनीतिक क्षेत्र। उनका मानना है कि युद्ध समाप्त होने के बाद ईसाई धर्म के लिए यह एक अच्छी जगह है। बेशक, हम अभी भी 1917 में हैं।

याद है, 1918 में उनकी मृत्यु हो गई थी? लेकिन वे ईसाइयों के लिए राजनीतिक अंतरराष्ट्रीय संबंधों में प्रवेश करने और व्यापक संस्कृति पर ईसाई संदेश लाने के लिए अच्छी उम्मीद जगा रहे हैं। इसलिए, यह रौशनबुश के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। इसलिए, यह एक बहुत ही उम्मीद भरी किताब है और जाहिर तौर पर एक मददगार किताब है क्योंकि लोग इस दूसरी तरफ जाने की कोशिश करते हैं।

तो, यह रौशनबुश है। अब, दो नाम जिनका हमने रौशनबुश के साथ समापन करने के लिए उल्लेख नहीं किया है। हमने वाशिंगटन ग्लैडेन का उल्लेख किया है।

हमने एडॉल्फ वॉन हार्नेक या जोशुआ स्ट्रॉंग का ज़िक्र नहीं किया। इसलिए, ऐसे दो नाम हैं जिन्हें आप नोट कर लेना चाहेंगे: वॉन हार्नेक और स्ट्रॉंग। चूंकि वॉन हार्नेक दोनों ही बर्लिन यूनिवर्सिटी में पढ़ाते थे, इसलिए स्ट्रॉंग एक अमेरिकी धर्मशास्त्री थे।

हालांकि, दोनों का दृढ़ विश्वास है कि ईसाई मूल्य व्यक्तियों में खुद को स्थापित कर सकते हैं और इसलिए, व्यापक समाज को प्रभावित कर सकते हैं। इसलिए, वॉन हार्नेक और स्ट्रॉंग दोनों इस पर बहुत जोर देते हैं। ईसाई मूल्य व्यक्ति को प्रभावित करते हैं, लेकिन फिर व्यक्ति के माध्यम से राष्ट्रीय जीवन में भी।

और, ज़ाहिर है, रौशनबुश को भी यही उम्मीद थी। इसलिए, इन चीज़ों के बारे में समान रूप से सोचने वाले लोगों के अर्थ में एक तरह की संगति है। हमने विशेष रूप से उल्लेख किया कि रौशनबुश के लिए पहले वाशिंगटन ग्लैडेन कितना महत्वपूर्ण था।

ठीक है, तो यह रौशनबुश के जीवन के बारे में थोड़ा सा है। आप किताब पढ़ रहे हैं। अगर आप इसे हफ़्ते में एक अध्याय नहीं पढ़ रहे हैं, तो अभी भी देर नहीं हुई है।

शुरू करें क्योंकि अंतिम परीक्षा के लिए पुस्तक से बहुत कुछ है। इसलिए, मैं अंतिम परीक्षा के लिए उस पुस्तक को वास्तव में अच्छी तरह से जानना चाहता हूँ। क्या उनके जीवन के बारे में कोई प्रश्न हैं? उनके जीवन का प्रकार, उनका मंत्रालय, वे क्या थे, उन्हें लिखने, प्रचार करने और सिखाने के लिए किस बात ने प्रेरित किया, इत्यादि।

क्या आपको न्यूयॉर्क में बिताए 11 साल और फिर रोचेस्टर वापस जाना याद है? हाँ, उन्होंने एक सहायक के साथ पढ़ाया, लेकिन वे अभी भी बोल सकते थे। लेकिन सहायक ने यह सुनिश्चित किया कि वे स्पष्ट रूप से बोलें और इसी तरह की अन्य बातें करें।

फिर, मैंने उन्हें प्रश्न दिए और इसी तरह की बातें कीं, कभी-कभी उन्हें लिखकर भी दिया। लेकिन उनके पास सहायक थे, और यह काफी अच्छी तरह से काम करता था, यहां तक कि बड़े समूहों के साथ भी। चूंकि रौशनबुश इतने प्रसिद्ध थे, इसलिए हर जगह उनके आने और बोलने, उपदेश देने या अपनी किताबों के बारे में बात करने आदि की मांग थी।

रौशनबुश और उनके जीवन के बारे में कुछ और। ठीक है, मुझे उम्मीद है कि आपको जीवनी पसंद आएगी। यह वाकई एक अद्भुत जीवनी है।

ठीक है, नंबर बी, सामाजिक सुसमाचार का धर्मशास्त्र। क्योंकि रौशनबुश ने इसे आगे बढ़ाया, इसलिए उन्हें सामाजिक सुसमाचार के पिता के रूप में जाना जाता है।

वह इसे शुरू करता है। लेकिन फिर, सामाजिक सुसमाचार से निकला धर्मशास्त्र क्या है? नंबर सी अमेरिकी ईसाई धर्म में सामाजिक सुसमाचार का योगदान है। ठीक है, सबसे पहले, सामाजिक सुसमाचार के धर्मशास्त्र की सूची में सबसे ऊपर कुछ ऐसा है जिसका उल्लेख हम पहले ही रौशनबुश के साथ कर चुके हैं, लेकिन वह ईश्वर का राज्य है।

अगर मुझे सामाजिक सुसमाचार आंदोलन से एक प्रमुख विषय चुनना हो, तो वह ईश्वर का राज्य होगा। अब, जहाँ तक सामाजिक सुसमाचार प्रचारकों का सवाल है, रौशनबुश भी इसमें शामिल हैं, लेकिन फिर उनके अनुयायी लोग भी इसमें शामिल हैं। ईश्वर का राज्य सिर्फ उद्धार प्राप्त लोगों के समुदाय से संबंधित नहीं था।

जाहिर है, इसका इससे बहुत कुछ लेना-देना था। लेकिन परमेश्वर का राज्य यहीं नहीं रुकता। यह उन लोगों के समुदाय तक ही सीमित नहीं है जिन्हें छुड़ाया गया है।

यह उन लोगों के समुदाय तक ही सीमित नहीं है जो विश्वास के द्वारा राज्य से संबंधित हैं। ईश्वर का राज्य भी समाज के परिवर्तन की ओर आगे बढ़ता है, समाज और संस्कृति को ईश्वर के राज्य की छत्रछाया में वापस लाता है, जहाँ वह है, जहाँ तक सामाजिक सुसमाचार प्रचारकों का संबंध है। और इसलिए, वे इसकी तलाश करते हैं, यह उनके लिए एक सिक्के की तरह है जिसके दो पहलू हैं।

इस सिक्के का एक पहलू सामाजिक कार्य है। और सिक्के का दूसरा पहलू, माफ़ करें, सामाजिक सुधार है। और सिक्के का दूसरा पहलू राजनीतिक कार्य है।

तो सामाजिक सुधार, राजनीतिक कार्रवाई, यह दो पहलू वाला सिक्का है, इसलिए आप सिक्के को आधे में नहीं बांट सकते; अन्यथा, यह बेकार है, और आप इनमें से आधे को भी नहीं पा सकते। आपको दोनों को ही अपनाना होगा। और इसलिए, सामाजिक सुधार और राजनीतिक कार्रवाई के बीच, चर्चों के अलावा राज्य के काम के संकेत हैं।

यहाँ राज्य कार्य के तीन संकेत दिए गए हैं जो चल रहे हैं: सामाजिक सुधार और राजनीतिक कार्रवाई। सबसे पहले, सरकार। आप सरकार को देखते हैं, और आप सरकार में किए गए राज्य कार्य के संकेत देखते हैं, भले ही सरकार में लोग ज़रूरी तौर पर ईसाई न हों, लेकिन वे और वे शायद इसे इस तरह से व्यक्त न करें, लेकिन वे वास्तव में राज्य के परिणामों के लिए काम कर रहे हैं।

तो, सरकार एक स्थान पर है। दूसरा स्थान, बेशक, वाणिज्य और व्यापार है। वाणिज्य और व्यापार, ये धर्मशास्त्रियों और सामाजिक सुसमाचार धर्मशास्त्रियों पर निर्भर है कि वे वाणिज्य और व्यापार को याद दिलाएँ कि वे क्या हैं, कि वे आम भलाई के लिए मौजूद हैं, और वे मौजूद हैं, वे परमेश्वर के राज्य का काम कर रहे हैं, भले ही वे इसे पहचान न पाएँ, इसलिए।

और तीसरा विषय वह है जिसके बारे में हमने दूसरे दिन बात की थी। मुझे लगता है कि यह एक प्रश्न के माध्यम से था, लेकिन तीसरा विषय रौशनबुश के लिए बहुत महत्वपूर्ण है, और वह है परिवार का जीवन। जहाँ तक उनका सवाल है, पारिवारिक जीवन इस सबका दिल था, और बहुत मजबूत था, और हमने उनके अपने पारिवारिक जीवन के बारे में बात की, और एक बहुत मजबूत पारिवारिक जीवन वास्तव में एक राज्य समाज की नींव है।

ये तीन क्षेत्र, सरकार, व्यवसाय और पारिवारिक जीवन, तीन तरह के सामुदायिक क्षेत्र हैं जो रौशनबुश के लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं। और हमने दूसरे दिन उल्लेख किया, याद रखें, उन्होंने

रोचेस्टर को एक तरह के मॉडल के रूप में स्थापित किया कि कैसे ये चीजें मिलकर ईश्वर के राज्य को आकार देने में मदद करती हैं। इसलिए, रोचेस्टर, उनके वापस आने के बाद उनके जीवन के बाकी समय के लिए, यह शहर एक आदर्श शहर बन गया।

यह एक तरह से कैल्विन के जिनेवा जैसा है। तो, यह है। तो यह एक बात है।

सामाजिक सुसमाचार के धर्मशास्त्र के बारे में दूसरी बात मानवता की पूर्णता है। सामाजिक सुसमाचार के अनुयायी मानवता की पूर्णता में विश्वास करते थे। इसलिए सामाजिक सुसमाचार के अनुयायियों का मानना था कि जहाँ तक उनका संबंध है, सुधार के बाद से ईसाई धर्म के तीव्र आंदोलन से यह स्पष्ट था।

जब वे सुधार के बाद से चर्च के इतिहास को देखते हैं, तो वे ईसाई धर्म को आगे बढ़ते, विकसित होते और आकार लेते हुए देखते हैं। यह अमेरिकी जीवन और संस्कृति में विशेष रूप से सच है। क्योंकि जहाँ तक उनका सवाल है, अमेरिकी जीवन और संस्कृति का ईसाईकरण वास्तव में तेज़ी से बढ़ रहा है।

यह वास्तव में बहुत तेज़ रहा है। और यह मानव जाति की पूर्णता का संकेत है। अब, मैं कहूंगा कि दूसरी पीढ़ी के सामाजिक सुसमाचार प्रचारकों ने इस पर बहुत ज़्यादा ज़ोर दिया क्योंकि रौशनबुश अभी भी इंजीलवादी थे।

इसलिए, एक ओर तो उन्होंने मानवजाति की पूर्णता को पहचाना। लेकिन दूसरी ओर, उन्होंने मानव की पापमयता को भी पहचाना। रौशनबुश यहाँ बारीकियों को बनाए रखने में सक्षम थे।

लेकिन जो लोग उसके पीछे चले गए, वे पाप के हिस्से को भूल गए, ऐसा लगता है, और उन्होंने मानवता की पूर्णता वाले हिस्से पर जोर दिया। लेकिन इसमें कोई संदेह नहीं है कि सामाजिक सुसमाचार का धर्मशास्त्र वास्तव में इस पूर्णता वाले सामान पर केंद्रित था।

तो यह दूसरा है। ठीक है, तीसरा, सामाजिक सुसमाचार का तीसरा प्रकार का धर्मशास्त्र। और वह है, चर्च किसके साथ जुड़ता है? चर्च, मसीह का शरीर, कैपिटल सी। इस दुनिया में चर्च को किसके साथ जुड़ना चाहिए? चर्च को किसकी तरफ होना चाहिए? खैर, सामाजिक सुसमाचारियों ने कहा कि चर्च को खुद को श्रमिक वर्गों के साथ जोड़ना चाहिए।

चर्च मज़दूर वर्गों के पक्ष में है। अगर सामाजिक व्यवस्था को बदलना है, अगर संस्कृति को पुनर्जीवित करना है, तो यह केवल मज़दूर वर्गों की ताकतों के ज़रिए ही किया जा सकता है। और इसलिए धार्मिक शक्ति और धर्म से आने वाली नैतिक शक्ति को मज़दूर वर्ग के काम, नौकरी और मज़दूर वर्गों के मंत्रालय को मज़बूती देनी चाहिए क्योंकि वे ही हैं जो समाज को नवीनीकृत करने जा रहे हैं, सामाजिक व्यवस्था को नवीनीकृत करने जा रहे हैं।

ठीक है, तो फिर इसका नियंत्रण किसके पास है? खैर, चर्च मज़दूर वर्गों के पक्ष में खड़े होकर, उनके पक्ष में खड़े होकर, उनका समर्थन करके लोगों की मदद कर सकता है। चर्च अंततः

नौकरी के काम, मज़दूर वर्गों के मंत्रालय को नियंत्रित करने में मदद कर सकता है। इसलिए, लोगों को इसमें शामिल होना चाहिए।

अब, इस बिंदु के अंतर्गत, सामाजिक सुसमाचार प्रचारकों ने सिर्फ व्यक्तिगत पाप पर ही ज़ोर नहीं दिया। वास्तव में, उन्होंने इसे जाने दिया, लेकिन हम इसके बारे में बाद में बात करेंगे। उन्होंने सिर्फ व्यक्तिगत पाप पर ही ज़ोर नहीं दिया, बल्कि सामाजिक सुसमाचार प्रचारकों ने कॉर्पोरेट बुराई के लिए एक तरह से चेतावनी दी।

यह सिर्फ व्यक्ति का पाप नहीं है, बल्कि व्यवस्था की बुराई है, उद्यम की बुराई है, और इसलिए व्यवस्थागत बुराई है। इसलिए उन्होंने गरीबी, उत्पीड़न, अन्याय, नस्लवाद, और ऐसी ही अन्य चीज़ों को संबोधित करना शुरू कर दिया। उन्हें लगा कि चर्च का काम यही है, सिर्फ व्यक्तिगत पाप के बारे में नहीं, बल्कि कॉर्पोरेट और व्यवस्थागत बुराई के बारे में भी बात करना।

इसलिए, जब आप सामाजिक सुसमाचार के धर्मशास्त्र को विकसित करना शुरू करते हैं, खासकर रौशनबुश से, तो यह कुछ हद तक धर्मशास्त्र है। अब, धर्मशास्त्र को छोड़ने से पहले, मुझे लगता है कि यह और रेनहोल्ड नीबुहर, हमें इसमें मदद करते हैं, लेकिन यह बाद की बात है, इसलिए हमें आज इसके बारे में चिंता करने की ज़रूरत नहीं है। लेकिन मुझे लगता है कि जैसे-जैसे यह विकसित हुआ, इसने खुद को तीन बड़ी धार्मिक कठिनाइयों में डाल लिया।

और मैं सिर्फ उन तीनों का ज़िक्र करना चाहता हूँ। तो यह बी के अंतर्गत है, सामाजिक सुसमाचार का धर्मशास्त्र। अब जबकि हमने धर्मशास्त्र के बारे में थोड़ा-बहुत जान लिया है, तो उस धर्मशास्त्र की क्या कठिनाइयाँ हैं? उस धर्मशास्त्र, सामाजिक सुसमाचार की क्या समस्याएँ हैं? ठीक है, मुझे लगता है कि तीन हैं, तो चलिए मैं सिर्फ उन तीनों के बारे में बात करता हूँ।

नंबर एक, यह वास्तव में बहस का विषय है कि क्या वे यीशु के राज्य के संदेश को समझ रहे हैं। राज्य का संदेश सामाजिक सुसमाचार प्रचारकों के लिए सर्वोपरि था, लेकिन क्या उनके पास राज्य का संदेश बिल्कुल सही था? क्योंकि मुझे नहीं लगता कि नए नियम में ऐसा कोई स्थान है जहाँ यीशु ने संकेत भी दिया हो कि जिस राज्य के बारे में वह बात कर रहे हैं वह एक राजनीतिक राज्य है। मुझे नहीं लगता कि यीशु इसके बारे में बात करते हैं; मुझे नहीं लगता कि वह राज्य की भाषा का राजनीतिक तरीके से उपयोग करते हैं।

मुझे नहीं लगता कि वह निश्चित रूप से राजनीतिक ताकतों के खिलाफ युद्ध में नहीं जाता। वह कोई कट्टरपंथी नहीं था। इसलिए, मुझे इस बात पर गंभीर संदेह है कि क्या वे परमेश्वर के राज्य को उसी तरह समझ रहे हैं जिस तरह यीशु ने परमेश्वर के राज्य को समझा था।

इसलिए यह समस्यापूर्ण हो जाता है क्योंकि उनका मुख्य ध्यान ईश्वर के राज्य पर है। क्या वे इसकी सही व्याख्या कर रहे हैं? क्या उनका व्याख्याशास्त्र सही तरीके से लक्ष्य पर है? और मुझे लगता है कि इसमें समस्याएँ हैं। दूसरे, मुझे लगता है कि सामाजिक सुसमाचार आंदोलन कुछ चीज़ों पर ज़ोर देने में अद्भुत है, लेकिन एक बार जब यह दूसरी पीढ़ी, तीसरी पीढ़ी में पहुँच जाता है, और पाप की वास्तविकता, व्यक्ति के विद्रोह, व्यक्ति के पाप, व्यक्ति के लिए ईश्वर की कृपा

की आवश्यकता, सभी प्रकार की चीज़ों को नकारना शुरू कर देता है, जिन पर रॉश और बुश अभी भी विश्वास करते थे और अभी भी तनाव में थे, एक बार जब आप उन चीज़ों को जाने देना शुरू करते हैं, तो सामाजिक सुसमाचार आंदोलन एक प्रतिक्रियावादी आंदोलन बन जाता है।

यह हमेशा न्याय के लिए नहीं होता, बल्कि यह धर्मनिष्ठता के खिलाफ़ एक प्रतिक्रिया है। और वे अमेरिकी ईसाई धर्म में धर्मनिष्ठता के तनाव को समझते हैं। इसलिए यह समस्याग्रस्त हो जाता है क्योंकि धर्मनिष्ठता के खिलाफ़ प्रतिक्रिया करते हुए, वे बाइबल और ईसाई धर्म में बहुत ही महत्वपूर्ण धार्मिक मामलों के खिलाफ़ प्रतिक्रिया कर रहे हैं।

तो यह आंदोलन की दूसरी तरह की आलोचना है। मुझे खुशी है कि यह किसी बात के लिए था, लेकिन दूसरी या तीसरी पीढ़ी का आंदोलन उनकी कथित धर्मनिष्ठता के खिलाफ़ एक प्रतिक्रियावादी आंदोलन है। और तीसरी बात।

अब, इवांस इस तीसरी बात पर कड़ी टिप्पणी करने जा रहे हैं, इसलिए मैं यहाँ इसका उल्लेख करूँगा। फिर, जब आप इवांस को पढ़ें, तो कृपया इसे देखें। लेकिन बहुत से सामाजिक सुसमाचार के लोगों ने ईश्वर के राज्य को पश्चिमी संस्कृति की उन्नति से जोड़ा। इसलिए सामाजिक सुसमाचार के बहुत से लोग बहुत ही सांस्कृतिक रूप से बंधे हुए लोग थे।

और इसलिए, अगर पश्चिमी संस्कृति आगे बढ़ती है, तो वे इसका अर्थ यह निकाल रहे हैं कि, ठीक है, ईश्वर का राज्य आगे बढ़ रहा है। ईश्वर के राज्य और पश्चिमी संस्कृति के बीच एक अंतर है। और मुझे लगता है कि रौशनबुश के बाद बहुत से सामाजिक सुसमाचार प्रचारक उस अंतर और उन विशिष्टताओं आदि को नहीं पहचान पाए।

तो, यह समस्याग्रस्त हो जाता है। यदि आप ईश्वर के राज्य को पश्चिमी संस्कृति से जोड़ने जा रहे हैं, तो आप गैर-पश्चिमी संस्कृतियों की किस तरह की आलोचना करने जा रहे हैं? आप गैर-पश्चिमी संस्कृतियों के प्रति कितने आलोचनात्मक होने जा रहे हैं? आप गैर-पश्चिमी संस्कृतियों को कितना समावेशी बनाने जा रहे हैं? यदि आप ईश्वर के राज्य को पश्चिमी संस्कृति, पश्चिमी संस्कृति की उन्नति से जोड़ते हैं, तो यह समस्याग्रस्त हो जाता है। यह कुछ ऐसा है जिस पर इवांस अपनी पुस्तक में जोर देंगे।

ठीक है, तो यह सिर्फ़ नंबर दो है, सामाजिक सुसमाचार का धर्मशास्त्र। तो, हाँ, हन्ना? ठीक है, हाँ, वह है। वह सामाजिक सुसमाचार का पिता है, इसमें कोई संदेह नहीं है।

जो व्यक्ति संभवतः सबसे प्रभावशाली है और जो उनसे थोड़ा आगे है, उसका नाम वाशिंगटन ग्लैडेन है। और ग्लैडेन ने कोलंबस, ओहियो में सामाजिक सुधार की आवश्यकता और इसी तरह की अन्य बातों के बारे में बात करना शुरू किया था। वह एक प्रसिद्ध उपदेशक थे।

और रौशनबुश आते हैं और इस तरह की टिप्पणियों को अधिक सुसंगत धर्मशास्त्र और इसी तरह की अन्य बातों में शामिल करते हैं। इसलिए, वह ईसाई सामाजिक विचार और रोमन कैथोलिक सामाजिक विचार से अवगत हैं। लेकिन हमने दूसरे दिन उल्लेख किया कि वह पदानुक्रमित चर्च संरचनाओं के बारे में थोड़ा आलोचनात्मक है क्योंकि वे न केवल लोकतांत्रिक

संस्कृति के साथ बल्कि बैपटिस्ट और मेथोडिस्ट और इसी तरह की अन्य संस्कृतियों के साथ भी असंगत प्रतीत होते हैं।

तो, निश्चित रूप से, वह इस बात से अवगत है। लेकिन वह सुंदर है; वह एक अभिनव व्यक्ति है, रौशनबुश है। जैसा कि वह इसे विभिन्न लोगों से प्राप्त कर रहा है, आप जानते हैं, इस बारे में बात करते हुए सुन रहा है और फिर अपनी बाइबिल खोल रहा है, वह वास्तव में प्रोटेस्टेंटवाद के लिए इस चीज़ को एक साथ रख रहा है।

वह कैथोलिक सामाजिक विचार से वाकिफ हैं, लेकिन प्रोटेस्टेंट सोच के मामले में, वह इस सामाजिक सुसमाचार के जनक हैं। लेकिन जैसा कि इवांस कहेंगे, वह इंजीलवादी हैं। वह बहुत सूक्ष्म हैं।

वह व्यक्तिगत पाप, व्यक्तिगत मुक्ति, व्यक्ति की व्यक्तिगत पवित्रता, ईश्वर की कृपा में विश्वास करते हैं। लेकिन वह यह भी मानते हैं कि, आप जानते हैं, हमें व्यवस्थागत बुराई के बारे में भी कुछ करना होगा। इसलिए मुझे लगता है कि वह इन चीज़ों को खूबसूरती से समझने में सक्षम हैं।

जैसा कि हमने बताया, वह ड्वाइट एल. मूडी का दोस्त था। वह नॉर्थफील्ड में भविष्यवाणिय सम्मेलनों में जाता था। इसलिए, वह ड्वाइट एल. मूडी से ज़्यादा सामाजिक सुसमाचार नहीं सुन रहा था।

इसमें कोई संदेह नहीं है। मुझे नहीं पता। क्या इससे कुछ मदद मिलती है? इवांस भी इनमें से कुछ प्रभावों में शामिल हो जाता है, खासकर वाशिंगटन और ग्लैडेन। रौशनबुश और सामाजिक सुसमाचार की इस तरह की धर्मशास्त्र जैसी कुछ और बातें।

सामान। ठीक है? क्या आप इसके लिए तैयार हैं? हाँ। वह तलाश कर रहा है, इससे भी अधिक, उसके पास पवित्रीकरण या पवित्रता का सिद्धांत था।

लेकिन यह वेस्ली की तरह सख्त नहीं था। इसलिए, लोगों के पाप और अन्य बातों के बारे में उनका दृष्टिकोण बहुत ऊंचा था। लेकिन उनका मानना था कि हम जीवन में आगे बढ़ने के दौरान एक तरह की प्रक्रिया में पवित्र होते हैं।

लेकिन वह यह भी मानता था कि वह जो उम्मीद कर रहा था, वह एक तरह से उंगलियों के बल पर खड़ा था; वह यह भी मानता था कि उस तरह की पवित्रता वाली पूर्णता पूरी दुनिया में आ सकती है। आप जानते हैं, वह उस तरह से लगभग एक पोस्ट-मिलेनियलिस्ट था। इसलिए उसने, अपनी दूसरी किताब में भी, भविष्य के लिए बड़ी उम्मीदें रखी थीं।

हाँ, तो मनुष्य की पूर्णता। वह अभी भी इसी बात पर विश्वास करते हुए मरा, भले ही वह प्रथम विश्व युद्ध के अंत में मर गया। उसके या धर्मशास्त्र के बारे में कुछ और। क्या यह ठीक है? हाँ।

हाँ। ठीक है। और साम्राज्यवादी शक्तियाँ।

साम्राज्यवादी या उपनिवेशवादी शक्तियाँ। यानी दूसरे लोगों पर शासन करना चाहती हैं। और जहाँ तक उसका सवाल है, उसके लिए सभी राष्ट्र उस पाप में भागीदार हैं।

सभी देशों में अपने पड़ोसियों पर शासन करने की इच्छा होती है। यह सिर्फ़ जर्मनी की बात नहीं है। यह सिर्फ़ अमेरिका की बात नहीं है।

सभी राष्ट्रों में यह व्यापक बुराई व्याप्त है। और वह सभी राष्ट्रों के लिए इसे मान्यता देना चाहता है। तो, क्या इससे मदद मिलती है? कुछ और? खैर, पाँच सेकंड का ब्रेक लें।

और फिर हम c करेंगे। ठीक है। मुझे लगता है कि सामाजिक सुसमाचार ने जो एक योगदान दिया है, वह यह है कि ईसाई धर्म सामाजिक और सामाजिक सरोकारों पर क्या प्रभाव डाल सकता है, इसकी समझ लाना। ईसाई धर्म समाज और सामाजिक न्याय पर क्या प्रभाव डाल सकता है? इसलिए, मुझे लगता है कि यह वास्तव में बहुत महत्वपूर्ण है।

और हम कुछ तरीकों के बारे में बात करने जा रहे हैं जिनसे इसे हासिल किया जा सकता है। अब, यह अमेरिकी ईसाई धर्म में बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि भले ही फित्री ने इंजील संबंधी चिंताओं के साथ-साथ सामाजिक चिंताओं पर भी जोर दिया, लेकिन उनके बाद आने वाले व्यक्ति, मूडी, ड्वाइट एल. मूडी, महान प्रचारक, महान पुनरुत्थानवादी, लेकिन व्यक्ति के प्रति बहुत अधिक धर्मनिष्ठ, व्यक्ति की धर्मनिष्ठता। मूडी का अमेरिकी ईसाई धर्म, विशेष रूप से अमेरिकी प्रोटेस्टेंटवाद पर बहुत प्रभाव था।

इसलिए, सुसमाचार का इस तरह का वैयक्तिकरण अमेरिकी जीवन में आने लगा। नॉर्थफील्ड में भविष्यवक्ता सम्मेलनों में जाने, ड्वाइट एल. मूडी को जानने और इसी तरह के अन्य लोगों से परिचित होने के कारण रौशनबुश को यह पता था। इसलिए, सामाजिक सुसमाचार आंदोलन के अच्छे योगदानों में से एक बुराई और पाप आदि के सामूहिक पहलुओं पर प्रकाश डालना है।

तो, किस तरह के सामाजिक अन्याय सामने आए? मैं उनमें से पाँच का उल्लेख करने जा रहा हूँ जो सामाजिक सुसमाचार के लोगों के कारण सामने आए। हम इसके लिए उनके आभारी हैं। ठीक है, नंबर एक, पहली बात जो सामने आई, वह निश्चित रूप से पूंजी और श्रम के बीच बहुत खराब कामकाजी संबंध थे।

मालिकों और श्रमिकों के बीच भयानक कामकाजी रिश्ते। सामाजिक सुसमाचार आंदोलन यहाँ एक रोशनी जला रहा है, जिससे पता चलता है कि क्या हो रहा है और हम इस पर कैसे काम कर सकते हैं। दूसरी बात, और आप हैरान नहीं होंगे क्योंकि हमने पहले ही, एक तरह से, इन बातों का उल्लेख कर दिया है।

दूसरी बात अनुचित वेतन है। सामाजिक सुसमाचार प्रचारकों, याद कीजिए हमने पिछले दिनों ब्रदरहुड ऑफ द किंगडम का जिक्र किया था, ब्रदरहुड ऑफ द किंगडम। ब्रदरहुड ऑफ द किंगडम ने अनुचित वेतन को प्रकाश में लाया।

तीसरा, निश्चित रूप से खराब कामकाजी परिस्थितियाँ। और हम पहले ही इस बारे में काफी बात कर चुके हैं। चौथा, अनुचित काम के घंटे।

याद रखें, हमारे लिए यह याद रखना मुश्किल है, लेकिन रौशेनबुश के समय में, लोग दिन में 14, 16 घंटे काम करते थे, कभी-कभी हफ्ते में सात दिन। कभी ऐसा करके देखें। हफ्ते में सात दिन, 14 घंटे करघे पर खड़े रहना, बहुत बुरा है।

तो अनुचित घंटे। और फिर अंत में, नंबर पांच सभी चार का सारांश है, लेकिन यह गरीबों की दुर्दशा है। गरीबों की दुर्दशा।

सामाजिक सुसमाचार के लोगों की मान्यता है कि आइए हम इसे स्वीकार करें। बहुत कम लोग ही बहुत अमीर हैं, और उन्होंने लाखों गरीब लोगों की पीठ पर यह पैसा कमाया है। इसलिए हमें यह याद रखना होगा।

हमें इस बात को प्रकाश में लाना होगा। यह महत्वपूर्ण है। अब, इस पाँचवें बिंदु के अंतर्गत, आप इसे इवांस में भी देखेंगे, इस पाँचवें बिंदु के अंतर्गत।

रौशेनबुश खुद से यह सवाल पूछते रहे कि हम अमीर लोगों को गरीबों की मदद करने के लिए कैसे प्रोत्साहित कर सकते हैं? हम उन्हें कैसे मना सकते हैं? क्या मैं कुछ कहना चाहता हूँ? हम अमीरों को गरीबों की पीड़ा कम करने के लिए गरीबों को देने के लिए कैसे मना सकते हैं? क्या ऐसा करने का कोई तरीका है? क्या यह सुसमाचार का काम है? क्या यह पादरी का काम है? क्या यह मंत्री का काम है? क्या यह चर्च का काम है कि वह अमीरों को देने के लिए मनाए, गरीबों की सेवा में मदद करे? आप यह कैसे कर सकते हैं? क्या यह संभव है? या फिर अमीर लोग अपनी ही दुनिया में इतने अलग-थलग हैं, उन्हें इस बात का कोई ज्ञान नहीं है कि गरीबों के बीच क्या हो रहा है, कि उन्हें इस बात की कोई समझ नहीं है कि यहाँ क्या हो रहा है? अब, इस तरह से, यह इंग्लैंड में दास व्यापार की तरह है। याद है हमने इंग्लैंड में दास व्यापार के बारे में बात की थी? उन्होंने आखिरकार इंग्लैंड में दास व्यापार पर कैसे काबू पाया? खैर, उन्होंने गुलामी का मुद्दा बनाया। उन्होंने गुलामी के मुद्दे को अमीरों के सामने लाया।

और आपको वह छोटी सी क्लिप याद है जो हमने दिखाई थी, वह छोटा सा वीडियो जो हमने उसके बारे में दिखाया था। तो यह एक बात है। ठीक है, तो यह पहली बात है।

सामाजिक सुसमाचार जीवन के कॉर्पोरेट पहलुओं पर ध्यान केंद्रित करता है, न कि केवल जीवन या धर्म के व्यक्तिगत पहलुओं पर। तो यह नंबर एक है। ठीक है, नंबर दो।

सामाजिक सुसमाचार आंदोलन ने अमेरिका में प्रमुख स्थानों को प्रभावित किया और अमेरिका में प्रमुख समूहों को धर्मशास्त्र और नैतिकता का अध्ययन करने के लिए प्रेरित किया। इसलिए इसने चर्चों को प्रभावित किया, इसने सेमिनारियों को प्रभावित किया, इसने कॉलेजों को इन प्रकार की चीजों, धर्मशास्त्र और नैतिकता के अध्ययन का उद्घाटन करने के लिए प्रभावित किया। और उन अध्ययनों ने संप्रदायों की सीमाओं को पार कर लिया।

इसलिए, ये सिर्फ बैपटिस्ट या मेथोडिस्ट या सिर्फ कांग्रेसनलिस्ट तक सीमित नहीं थे। धर्मशास्त्र और नैतिकता के अध्ययन ने संप्रदायों की सीमाओं को पार कर लिया। यह अमेरिकी ईसाई जीवन में विभिन्न संप्रदायों को एक साथ जोड़ने का एक अच्छा तरीका था।

तो यह बात सिर्फ चर्चों के लिए ही नहीं बल्कि सेमिनारियों के लिए भी सच थी। तीसरा नंबर। अंत में, पूरे संप्रदायों में सामाजिक मंत्रालय के कार्यालय होने लगे।

इसलिए, पूरे संप्रदायों ने सामाजिक मंत्रालय को एक तरह की बाइबिल और धार्मिक परियोजना के रूप में लेना शुरू कर दिया। नंबर चार वास्तव में महत्वपूर्ण है, और वह यह है कि सामाजिक सुसमाचार आंदोलन ने बहुत सारे संस्थागत जीवन की शुरुआत की जो गरीबों के लिए महत्वपूर्ण थी। स्कूल, डेकेयर सेंटर, आवास।

लेकिन उन्होंने बहुत सारे अस्पतालों को अपने नियंत्रण में लेना शुरू कर दिया। उन्होंने संस्थागत जीवन विकसित करना शुरू कर दिया, लेकिन संस्थागत जीवन सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण था, हर संभव तरीके से गरीबों की मदद करना। इसलिए इसने वास्तव में वहाँ मदद करने की कोशिश की।

अब, ठीक है, तो गरीबों की मदद करना। डेकेयर सेंटर, अस्पताल और स्कूल हर संभव तरीके से। लगभग दो साल पहले टेलीविजन पर एक साक्षात्कार था जिसे देखना वाकई मुश्किल था क्योंकि टेलीविजन पर वह व्यक्ति यह तर्क देने की कोशिश कर रहा था कि हमें क्या करना है, हमें सामाजिक मंत्रालय को चर्चों और धार्मिक समूहों आदि से अलग करना होगा।

हमें अलग होना होगा। हमें इन चर्चों को इस मंत्रालय के रास्ते से हटाना होगा जिसे हम शहरों में करने की कोशिश कर रहे हैं। अगर हम चर्चों को यहाँ से हटा सकें, तो हम अच्छी स्थिति में होंगे।

और फिर जब उनसे इस बारे में पूछा गया, तो उन्होंने कहा, देखिए, चर्च कभी भी इसमें शामिल नहीं रहे हैं। तो अब, अचानक, पिछले 20 सालों में, वे डेकेयर सेंटर और अस्पताल वगैरह शुरू करके पानी को गंदा कर रहे हैं। अब, ऐसी पूर्ण अज्ञानता के सामने आप क्या करते हैं? आप क्या करते हैं? यह अविश्वसनीय था, इस व्यक्ति की अज्ञानता जो आस्था-आधारित समूहों को काम से बाहर निकालने की कोशिश कर रही थी।

यह तर्क दिया जा सकता है कि अमेरिका डेकेयर सेंटर, स्कूल, अस्पताल इत्यादि में इतना समृद्ध है, इसका कारण यह है कि यह सरकार की वजह से नहीं बल्कि इन चीजों में इतना समृद्ध है। मुझे लगता है कि मैं अब अपनी बात पर आ रहा हूँ, लेकिन वे इन चीजों में इतने समृद्ध हैं, इसलिए नहीं कि सरकार ने उन चीजों को स्थापित किया है। ऐसा इसलिए है, क्योंकि अमेरिकी जीवन और संस्कृति के इतिहास में, चर्च ने लोगों के प्रति करुणा के कारण उन चीजों को स्थापित किया है।

इसीलिए हमारे पास डेकेयर सेंटर हैं। इसीलिए हमारे पास अस्पताल हैं। इसीलिए हमारे पास गरीबों के लिए संस्थान हैं और ऐसी ही अन्य चीजें हैं।

तो, हम इसके लिए किसका धन्यवाद करते हैं? खैर, इसके लिए हमें जिन समूहों का धन्यवाद करना चाहिए, उनमें से एक है सामाजिक सुसमाचार आंदोलन क्योंकि यह सिर्फ सामाजिक सुसमाचार नहीं था; यह सिर्फ एक दार्शनिक विचार नहीं था जो उनके पास था। उन्होंने इसे व्यवहार में लाया, और उन्होंने इस तरह के तरीकों से गरीबों की देखभाल की। आज हम अमेरिकियों के सांस्कृतिक जीवन में जहाँ हैं, वह मुख्य रूप से इन लोगों की वजह से है, इसलिए हम उनके आभारी हैं।

इसलिए, मुझे नहीं पता कि जब आप लोगों को इस तरह की बातें करते हुए सुनते हैं, तो यह अमेरिकी ईसाई धर्म के बारे में पूरी तरह से अज्ञानता है और गरीबों के लिए उनके द्वारा की गई मदद के बारे में अज्ञानता है। इसलिए हम इसके लिए आभारी हैं। इसलिए बहुत सारी सामाजिक सेवाएँ, अगर आप उन्हें यही कहना चाहते हैं, सामाजिक सुसमाचार आंदोलन के कारण आईं।

और अंत में, सामाजिक सुसमाचार आंदोलन का चर्च के मिशनरी कार्य पर भी प्रभाव पड़ा। हर कोई नहीं था, मैं यह बहुत स्पष्ट रूप से कहूंगा, हर कोई नहीं, लेकिन 19वीं शताब्दी में बहुत से मिशनरियों के साथ, उनकी एकमात्र चिंता उन लोगों की आत्माओं को बचाने के साथ थी, जिनकी वे सेवा करते थे, जो ठीक है। यह सुसमाचार का हिस्सा है।

हालाँकि, सामाजिक सुसमाचार का वास्तव में कॉलेजों, सेमिनरी, पल्पिट्स और चर्चों पर प्रभाव पड़ा, और लोगों ने यह देखना शुरू कर दिया कि मिशनरी कार्य लोगों की आत्माओं को बचा रहा था, लेकिन यह सब नहीं है। तो मिशनरी कार्य कृषि मिशन है। मैंने तीन लिखे हैं: कृषि मिशन, चिकित्सा मिशन और शैक्षिक मिशन।

इसलिए, कृषि, चिकित्सा और शिक्षा में, मिशनरी के काम की इस तरह की कॉर्पोरेट समझ काफी हद तक सामाजिक सुसमाचार के लोगों की वजह से है। इसलिए, आत्माओं को बचाना ठीक है, लेकिन यह कृषि, चिकित्सा और शैक्षिक मंत्रालयों के साथ-साथ चलता है। अब, पूरा धर्मशास्त्र जो इसे रेखांकित करता है वह यह था कि जब आप लोगों के साथ व्यवहार करते हैं, तो आपको उनके साथ व्यक्तियों के रूप में व्यवहार करना होगा।

इसलिए, अगर आप उनसे सिर्फ आध्यात्मिक रूप से ही पेश आ रहे हैं, तो आप उनका मूल्य नहीं समझते क्योंकि उनकी शारीरिक ज़रूरतें भी हैं। आप उन लोगों का मूल्य तभी समझते हैं जब आप उनकी शारीरिक ज़रूरतों, उनकी चिकित्सा ज़रूरतों, उनकी कृषि ज़रूरतों और उनकी शिक्षा संबंधी ज़रूरतों को पहचानते हैं। आप उन्हें लोगों के रूप में महत्व देते हैं।

लेकिन दूसरी ओर, अगर आप सिर्फ शारीरिक रूप से उनकी मदद करते हैं तो आप उन लोगों की कोई सेवा नहीं करते। जब तक आप आध्यात्मिक रूप से उनकी मदद नहीं करते, आप उन्हें एक व्यक्ति के रूप में कमतर आंक रहे हैं। इसलिए, यहाँ एक समग्र सुसमाचार है जिसे लोग पकड़ने की कोशिश करना चाहते हैं।

लेकिन सामाजिक सुसमाचार के लोगों ने हमें याद दिलाया कि मिशनरी कार्य सिर्फ आत्मा को बचाने के बारे में नहीं है। यह लोगों की मदद भी करता है क्योंकि आप उन्हें महत्व देते हैं। यह लोगों को शारीरिक रूप से भी मदद करता है।

तो, अमेरिका में सामाजिक सुसमाचार आंदोलन का योगदान था, इसमें कोई संदेह नहीं है। सेमिनरी, चर्च और कॉलेजों पर प्रभाव। कुछ धर्मशास्त्र के बावजूद बहुत सारे योगदान थे, जिनके बारे में मुझे लगता है कि सवाल उठाने की जरूरत है।

ठीक है, व्याख्यान संख्या 15, अमेरिका में सामाजिक सुसमाचार। क्या आपके पास यहाँ कोई प्रश्न है? कोई प्रश्न? अमेरिका में सामाजिक सुसमाचार बहुत महत्वपूर्ण है। रौशनबुश, बहुत महत्वपूर्ण है।

इसीलिए मैंने आपको रौशनबुश की जीवनी पढ़ने को कहा है। यहाँ यह बहुत महत्वपूर्ण है। हाँ, वास्तव में सामाजिक सुसमाचार आंदोलन के प्रति एक प्रतिक्रिया थी क्योंकि लोगों ने देखा कि सामाजिक सुसमाचार के दूसरे, तीसरे या चौथे पीढ़ी के लोग रौशनबुश द्वारा प्रचारित संदेश के प्रति वफादार नहीं थे।

और इसलिए मैं यह नहीं कहूंगा कि अधिक संप्रदायों ने इसे अपनाया। मैं कहूंगा कि संप्रदायों के भीतर, सामाजिक मंत्रालय में आपको कितनी दूर जाना चाहिए, इस बारे में रैंकों में कुछ विभाजन था। आप जानते हैं, कितना दूर जाना बहुत दूर है या जो भी हो?

तो, मैं कहूंगा कि यही आपको मिला। आपके पास कुछ आंदोलन थे जो इस पूरे आंदोलन से बहुत जुड़े हुए थे और इस पूरे आंदोलन का हिस्सा थे, साल्वेशन आर्मी निश्चित रूप से उनमें से एक थी। केकर्स एक और आंदोलन था जो केकर्स के लिए बहुत महत्वपूर्ण था।

तो, आपके पास भी यह था। तो, मैं कहूंगा कि इस पर आपके रैंकों में कुछ विभाजन था। अब, हमने अभी तक कट्टरवाद के बारे में बात नहीं की है, लेकिन यह अन्य चीजों के अलावा सामाजिक सुसमाचार आंदोलन की प्रतिक्रिया है।

के अन्य प्रश्न ? यहाँ बहुत महत्वपूर्ण हैं। ठीक है, हम इसे अभी शुरू करेंगे। हम इसे अभी शुरू करेंगे और फिर बुधवार को इसे फिर से उठाएँगे।

यह पृष्ठ 15 के शीर्ष पर व्याख्यान संख्या 16 है। यह पृष्ठ 16 के शीर्ष पर व्याख्यान संख्या 16 है। ठीक है, तो हम यहाँ हैं।

व्याख्यान संख्या 16, नव-रूढ़िवाद और सामाजिक संकट। नव-रूढ़िवाद और सामाजिक संकट। ठीक है, यहाँ एक लंबी पृष्ठभूमि है, और मुझे यकीन नहीं है कि हम नव-रूढ़िवाद और सामाजिक संकट पर इस पूरी पृष्ठभूमि को यहाँ समाप्त करने जा रहे हैं, लेकिन आइए इसे यहाँ से शुरू करें।

ठीक है, सबसे पहले, यहाँ नव-रूढ़िवाद, नई रूढ़िवादिता की परिभाषा दी गई है। चलिए परिभाषा देते हैं। अब, मुझे कहना चाहिए कि हमें लेबल के साथ सावधान रहना चाहिए।

लेबल हमें लोगों की पहचान करने में मदद करते हैं, लेकिन हम लोगों को सिर्फ एक बॉक्स में नहीं रखना चाहते, और आप यह समझते हैं। हमने पाठ्यक्रम में लेबल का इस्तेमाल किया है, जैसे कि सामाजिक सुसमाचार। हम लोगों को एक बॉक्स में नहीं रखना चाहते, लेकिन इससे हमें उन्हें पहचानने में मदद मिलती है।

ठीक है, नव-रूढ़िवाद, नया रूढ़िवादी। नया रूढ़िवादी 20वीं सदी के लोगों का एक समूह है, मुख्य रूप से 20वीं सदी के धर्मशास्त्री जो बाइबल के प्रति प्रतिबद्ध हैं। वे बाइबल के संदेश के प्रति प्रतिबद्ध हैं।

उन्हें लगता है कि बाइबिल के संदेश में ताकत है, और वे जानते हैं कि प्रोटेस्टेंट उदारवाद ने उस बाइबिल संदेश को कमजोर कर दिया है। प्रोटेस्टेंट उदारवाद ने, क्योंकि इसने बाइबिल की अत्यधिक आलोचना को अपनाया है, वास्तव में बाइबिल के संदेश को कमजोर कर दिया है या बाइबिल के संदेश के बिना ही काम चला लिया है। और इसलिए ये लोग हमें बाइबिल के संदेश और उस संदेश की ताकत की ओर वापस लाना चाहते हैं।

ठीक है, अब सवाल यह है कि इस पहली चीज़ के अंतर्गत, इस परिभाषा के अंतर्गत, सवाल यह है कि यह नया रूढ़िवादी है। बाइबिल की व्याख्या करने के लिए वे किस लेंस का उपयोग करने जा रहे हैं? हम सभी बाइबिल की व्याख्या विभिन्न तरीकों से करते हैं। वे धर्मग्रंथों की व्याख्या करने के लिए सुधारवाद को अपने लेंस के रूप में उपयोग करने जा रहे हैं, और विशेष रूप से उनमें से कई के साथ, वे जॉन कैल्विन का उपयोग करने जा रहे हैं।

कैल्विन अन्य सुधारकों के बीच एक व्यक्ति होने जा रहा है, लेकिन कैल्विन वह व्यक्ति होने जा रहा है जिसका उपयोग वे 20वीं सदी के लिए बाइबिल के संदेश की महानता और महिमा को समझने में मदद के लिए करेंगे। तो, यह नया रूढ़िवादी है। और जिस पर आप ध्यान देना चाहते हैं, वह एक अर्थ में, वह नहीं है जिस तरह से यह पहली महान जागृति में था या जिस तरह से यह प्यूरिटन में था, लेकिन जिस पर आप ध्यान देना चाहते हैं, वह एक अर्थ में, यह कैल्विनवाद है जिसे अमेरिकी ईसाई अनुभव में वापस लाया गया है।

और यह कैल्विनवाद की तीसरी लहर होगी, है न? क्योंकि हमने इसे सबसे पहले प्यूरिटन के साथ देखा, फिर हमने इसे पहली महान जागृति के साथ देखा, और फिर हमने इसे कुछ हद तक न्यू ऑर्थोडॉक्सी के साथ देखा। प्यूरिटनवाद या पहली महान जागृति के चरम पर नहीं, लेकिन एक तरह के धर्मशास्त्र के रूप में कैल्विनवाद यहाँ कुछ हद तक विचार में आता है। ठीक है, अब यहाँ एक और बात है जिस पर हम ध्यान देना चाहते हैं।

नए रूढ़िवादी लोगों को लगा कि अमेरिका अमेरिकी ईसाई धर्म था; हम यहाँ प्रोटेस्टेंटवाद के बारे में बात कर रहे हैं क्योंकि रोमन कैथोलिक और पूर्वी रूढ़िवादी अभी भी एक तरह से अपनी ही दुनिया हैं। नए रूढ़िवादी धर्मशास्त्रियों को लगा कि अमेरिकी ईसाई धर्म गंभीर रूप से विभाजित था और इस विभाजन में एक बड़ा अंतर रह गया था। ठीक है, उस विभाजन के बाईं ओर, तो मैं आपका सामना कर रहा हूँ, ऐसा लगता है कि यह दाईं ओर होने जा रहा है।

उस विभाजन के बाईं ओर प्रोटेस्टेंट उदारवाद है। इनमें से कई नए रूढ़िवादी लोगों के अनुसार प्रोटेस्टेंट उदारवाद, प्रोटेस्टेंट उदारवाद काफी हद तक दिवालिया हो चुका था। प्रोटेस्टेंट उदारवाद ने अपने वादे पूरे नहीं किए थे।

और इसलिए, बाईं ओर प्रोटेस्टेंट उदारवाद है, और यह लोगों को वह नहीं दे रहा है जो उन्होंने लोगों को देने का वादा किया था। यह वास्तव में ऐसा नहीं है, और वहाँ बहुत कुछ नहीं है। हम इसके बारे में बाद में बात करेंगे जब हम कट्टरवाद और इंजीलवाद के बारे में बात करेंगे।

अब दाईं ओर एक आंदोलन है जो 19वीं सदी के अंत में शुरू हुआ और 20वीं सदी में आकर बहुत मजबूत हो गया। और वह था अमेरिकी कट्टरवाद। अब, हम कट्टरवाद पर बाद में व्याख्यान देंगे, इसलिए हम यहाँ इसके बारे में चिंता नहीं करेंगे।

लेकिन अमेरिकी कट्टरवाद दाईं ओर है, और भगवान आपका भला करे, और अमेरिकी कट्टरवाद, जहाँ तक नए रूढ़िवादी धर्मशास्त्रियों का सवाल है, अमेरिकी कट्टरवाद अपने वादों पर खरा नहीं उतर रहा था। अमेरिकी कट्टरवाद बहुत कठोर था। यह बहुत पंथवादी था।

यह बहुत संकीर्ण था। और इसलिए यह बाइबिल आधारित ईसाई धर्म होने के अपने वादों पर खरा नहीं उतर रहा था। ठीक है, जहाँ तक नए रूढ़िवादी धर्मशास्त्रियों का सवाल है, तो इससे एक अंतर पैदा हो गया।

इससे अमेरिकी ईसाई धर्म में एक बहुत बड़ा अंतर पैदा हो गया। लोगों के पास यही दो विकल्प थे। क्या मेरा चर्च उदारवादी होना चाहिए या कट्टरपंथी? हमें कौन सा होना चाहिए? नए रूढ़िवादी धर्मशास्त्री एक रणनीति के साथ आते हैं, और उनकी रणनीति अमेरिकी जीवन में व्यापक मध्य प्रोटेस्टेंटों से अपील करना है जो उदारवाद और कट्टरवाद से असंतुष्ट हैं।

आइए हम उनसे अपील करें। और वे क्या अपील करने जा रहे हैं? अपील यह है कि हमारे पास एक ठोस बाइबिल धर्मशास्त्र है, और हम आपको उस धर्मशास्त्र को बहुत सावधानी से निर्धारित बौद्धिक तरीके से दे रहे हैं। इसलिए, यहाँ नए रूढ़िवादी धर्मशास्त्रियों के बीच बुद्धि के लिए, मन के जीवन के लिए एक वास्तविक अपील है।

तो, हमारे पास बाइबल है। हम अपने दिमाग के इस्तेमाल से बाइबल की आलोचनात्मक और सावधानीपूर्वक व्याख्या करना चाहते हैं, और इस अपील ने, एक तरह से, जीत हासिल की क्योंकि बहुत से लोगों को यकीन था कि न्यू ऑर्थोडॉक्स सही था। अब, उस अपील के साथ, न्यू ऑर्थोडॉक्स धर्मशास्त्रियों ने कुछ चीजों को जारी रखने की अनुमति दी।

तो, मैं चार का उल्लेख करने जा रहा हूँ जिन्हें उन्होंने व्यापक संस्कृति में होने दिया। ठीक है, तो ये हैं। नंबर एक, वे वैज्ञानिक स्वतंत्रता की अनुमति देते हैं।

सभी सत्य ईश्वर के सत्य हैं। उसका अनुसरण करें। वैज्ञानिकों को जहाँ कहीं भी सत्य मिले, उसका अनुसरण करना चाहिए।

विज्ञान धर्म का दुश्मन नहीं है। विज्ञान सिर्फ धर्म का दुश्मन नहीं है। यह धर्म के साथ युद्ध नहीं कर रहा है।

अब, अमेरिका में प्रोटेस्टेंटवाद के बीच के रास्ते पर चलने वाले बहुत से लोगों के लिए, यह बात समझ में आती है। तो, ठीक है, यह नंबर एक है। नंबर दो, और यहाँ, यह थोड़ा समस्याग्रस्त हो जाता है, लेकिन उन्होंने बाइबिल की आलोचना की अनुमति दी।

उन्हें लगा कि बाइबिल की आलोचना से निपटने का तरीका बौद्धिक रूप से निपटना है, न कि इसे सिर्फ ऐसी चीज़ के रूप में देखना जो हर समय ईसाई धर्म के खिलाफ़ लड़ने वाली है। इसलिए, उन्होंने बाइबिल की आलोचना की अनुमति दी। इसलिए, उन्हें लगा कि उदारवादी बाइबिल की आलोचना के मामले में बहुत ढीले थे।

उन्हें लगा कि कट्टरपंथी लोग बाइबिल की किसी भी आलोचना को स्वीकार नहीं करते, लेकिन वे इसके लिए अनुमति देने जा रहे हैं। तो यह नंबर दो है। ठीक है, नंबर तीन, वे शहरी संस्कृति के विकास की अनुमति देते हैं और वास्तव में इसे अपनाते हैं।

वे भाग नहीं रहे हैं; यह एक नया रूढ़िवादी आंदोलन था जो शहरी जीवन की चुनौतियों से भागने वाला नहीं था। बहुत सारे ईसाई इससे भाग रहे थे। बहुत सारे ईसाई इससे कोई लेना-देना नहीं चाहते थे।

जहाँ तक उनका सवाल है, यह बुराई थी, न कि नए रूढ़िवादी धर्मशास्त्रियों के लिए। हम शहरी जीवन की स्वतंत्रता की अनुमति देते हैं, और हम देखना चाहते हैं कि चर्च किस तरह से संस्कृति और शहरी संस्कृति को अपना सकता है और शहरी संस्कृति की सेवा कर सकता है। तो यह नंबर तीन है।

ठीक है, और चौथा, उन्होंने इसकी अनुमति दी और वास्तव में इसकी आलोचना की, जैसा कि हम देखेंगे, अमेरिकी सार्वजनिक जीवन की सामाजिक और आर्थिक संरचनाओं की बहुत भारी, बहुत दृढ़ता से आलोचना की। इसलिए, उन्होंने अमेरिकी जीवन की संरचनाओं, राजनीतिक संरचनाओं, आर्थिक संरचनाओं, व्यावसायिक संरचनाओं, और इसी तरह की अन्य संरचनाओं की आलोचना, आर्थिक आलोचना और सामाजिक आलोचना की अनुमति दी। इसलिए, उन्होंने इसकी आलोचना की अनुमति दी और खुद भी इसकी बहुत आलोचना की क्योंकि उन्होंने इसे गैर-बाइबिल के रूप में देखा।

तो, वे इस बात से खुश नहीं थे। ठीक है। यह तो बस शुरुआत है।

तो, हम कुछ दिनों तक न्यू ऑर्थोडॉक्सी के बारे में बात करेंगे। यह लोगों का एक महत्वपूर्ण समूह है। तो आपका दिन शुभ हो।

यह डॉ. रोजर ग्रीन द्वारा अमेरिकी ईसाई धर्म पर दिए गए उनके उपदेश हैं। यह सत्र 20 है, अमेरिका में सामाजिक सुसमाचार, भाग 2।

